SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जैन साहित्य में पर्यावरणीय चेतना अहिंसा, अपरिग्रह और सह–अस्तित्व की शाश्वत राह

मो. फजल, शोधार्थी, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
मो. फजल, शोधार्थी
E-mail : mdfazal8540@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/06/2025
Revised on : 18/08/2025
Accepted on : 27/08/2025
Overall Similarity : 01% on 19/08/2025

शोध सार

भारतीय दर्शन में सभी विचारधाराओं ने पर्यावरणीय विचारों पर ध्यान दिया है लेकिन जैन दर्शन में यह दृष्टिकोण अत्याधिक प्रासंगिक और विशिष्ट है। जैन साहित्य में अहिंसा, अपरिग्रह और जीवों के अस्तित्व की सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया है। जैन दर्शन सूक्ष्म जीवों तक के संरक्षण की शिक्षा देता है। तत्त्वार्थ सूत्र का सूत्र "परस्परोपग्रहो जीवाणाम्" पर्यावरणीय दृष्टिकोण को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसका अर्थ है कि पृथ्वी के सभी जीव एक–दूसरे पर निर्भर हैं और एक–दूसरे के उपकार के लिए हैं। जैन आचार्यों ने भौतिक वस्तुओं के कम उपयोग और जीवन में संतुलन बनाए रखने का मार्ग दिखाया है। आज के समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं के लिए जैन दर्शन के पर्यावरणीय विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द

जैन दर्शन, तत्त्वार्थ सूत्र, अहिंसा, परस्परोपग्रहो जीवाणाम्, अपरिग्रह, अनेकान्तवाद.

भूमिका

भारतीय दर्शन की विविध धाराओं में जैन धर्म की विशिष्टता केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन पद्धति और ब्रह्मांड के साथ मानव के संबंध को गहराई से परिभाषित करता है। जैन दृष्टिकोण में पर्यावरण और प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें जीवित, संवेदनशील और परस्पर जुड़े तत्वों के रूप में माना जाता है।

जैन दर्शन के केंद्र में अहिंसा का सिद्धांत है। यह केवल प्रत्यक्ष हिंसा जैसे किसी प्राणी की हत्या तक सीमित नहीं है, बल्कि अप्रत्यक्ष हिंसा प्रदूषण फैलाना,

जल और भूमि को दूषित करना, वनों का दोहन करना और सूक्ष्मजीवों के जीवन को नष्ट करना भी हिंसा की श्रेणी में आता है।

जैन साहित्य में पर्यावरणीय संवेदनशीलता के उदाहरण

आचारांग सूत्रः महावीर स्वामी ने साधु–साध्वियों को निर्देश दिया कि चलने से पहले झाड़ू से भूमि को धीरे से साफ करें, मुँह पर कपड़ा बांधें, और पानी पीने से पहले उसे छानें, ताकि किसी जीव को अनजाने में भी कष्ट न पहुँचे।

तत्त्वार्थ सूत्रः ''परस्परोपग्रहो जीवाणाम्'' सभी जीव एक–दूसरे के उपकार के लिए हैं।

अपरिग्रहः भौतिक वस्तुओं और संसाधनों के प्रति सीमित आसक्ति। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना समाज और प्रकृति में असंतुलन पैदा करता है।

अनेकान्तवादः सत्य के अनेक रूप और दृष्टिकोण होते हैं। पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में केवल तकनीकी दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है; सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी आवश्यक हैं।

जैन ग्रंथों और कथाओं में पर्यावरणीय दृष्टि

महापुराण और त्रिलोकसारः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति को जीवनवान माना गया है। इनके नाश को हिंसा माना गया।

समवसराण कथाएँः सभी जीवों के प्रति समान उपदेश, संतुलित सह–अस्तित्व का संदेश।

Jain Declaration on Nature (1990) प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग और जैव विविधता का नाश भी हिंसा माने गए हैं।

विद्वानों जैसे ऐडन रैंकिन और क्रिस्टोफर चौपल ने जैन पर्यावरण दर्शन को आधुनिक विज्ञान और वैश्विक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विशिष्ट बताया है।

व्यावहारिक योगदान

जैन समुदाय ने पर्यावरण संरक्षण में कई व्यावहारिक पहलें की हैं:

1. **वनस्पति आधारित आहारः** मांस की मांग कम होती है और पशुपालन के पर्यावरणीय प्रभाव घटते हैं।
2. **जल संरक्षणः** जल संचयन और संरक्षण के उपाय।
3. **ऊर्जा संरक्षणः** ऊर्जा कुशल प्रथाओं को अपनाना।
4. **कचरा प्रबंधनः** कचरे के निपटान और कम करने के उपाय।
5. **पर्यावरण शिक्षा और जागरूकताः** लोगों को संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित करना।
6. **वक्षारोपणः** वृक्षारोपण कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी।
7. **पिंजरापोल और पशु संरक्षणः** कमजोर और असहाय जीवों की रक्षा।

निष्कर्ष

जैन समुदाय ने पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक योगदान दिया है। जैन धर्म के सिद्धांत जैसे अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद और परस्परोपग्रहो जीवानाम् ने जैन समुदाय को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार बनाया है। अहिंसा का सिद्धांत केवल प्रत्यक्ष हिंसा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जल, वायु, भूमि और सूक्ष्मजीवों को अनावश्यक क्षति पहुँचाने से बचना भी शामिल है। अपरिग्रह का संदेश हमें सीमित संसाधन उपयोग, संतुलित उपभोग और भौतिक लोभ से मुक्त जीवन की ओर प्रेरित करता है। अनेकांतवाद हमें यह समझने में मदद करता है कि पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान केवल एक दृष्टिकोण से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक, नैतिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टिकोणों को समेकित करना आवश्यक है। जैन समुदाय

ने इन सिद्धांतों को केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि जीवन के व्यवहार में भी उन्हें उतारा है। इसके प्रमुख उदाहरणों में वनस्पति आधारित आहार अपनाना शामिल है, जिससे पशुपालन और मांस उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव कम होते हैं। जल संरक्षण और जल संचयन के उपाय अपनाना, ऊर्जा संरक्षण और कुशल ऊर्जा प्रथाओं का पालन करना, कचरा प्रबंधन और कचरे में कमी लाने के प्रयास करना, वृक्षारोपण में सक्रिय योगदान देना और पर्यावरण शिक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेना, ये सभी जैन समुदाय की पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, जैन दर्शन केवल व्यक्तिगत जीवन और आध्यात्मिक मुक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और प्रकृति के साथ संतुलित सह–अस्तित्व की शिक्षा भी देता है। जैन दृष्टिकोण हमें यह याद दिलाता है कि पृथ्वी और इसके सभी जीव एक–दूसरे पर निर्भर हैं और यदि हम इस संतुलन को बिगाड़ते हैं, तो स्वयं भी प्रभावित होते हैं इसलिए जैन सिद्धांत आज के समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी और जैव विविधता के संकट जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में अत्यंत प्रासंगिक हैं। अतः कहा जा सकता है कि जैन दर्शन का पर्यावरणीय संदेश केवल नैतिक शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन की एक सम्पूर्ण पद्धति है। यह हमें संयमित जीवन, करुणा, संवेदनशीलता और प्रकृति के साथ संतुलित सह–अस्तित्व की ओर प्रेरित करता है। इन सिद्धांतों को अपनाकर न केवल वर्तमान पीढ़ी सुरक्षित और स्वस्थ जीवन जी सकती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्थायी और समृद्ध पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. उमास्वामी (2017) *तत्त्वार्थ सूत्र,* अनुवाद एवं टीका, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
2. जैन, परमेष्ठीदास (1987) आचारांग सूत्र, प्राकृत मूल एवं हिंदी अनुवाद, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
3. जिनसेनाचार्य, महापुराण
4. Singhvi, L. M. (1990) *Jain Declaration on Nature,* Federation of jain Association in north America, Milpitas.
5. Rankin, Aidan (2018) *Jainism and Environmental Philosophy: Karma and the Web of Life,* Routledge Taylor & Francis group, London And new York.
6. Chapple (2001) *Christopher Key- The Living Cosmos of Jainism: A Traditional Science Grounded in Environmental Ethics,* American Academy of Arts and science, Daedalus.
7. Jaini, Padmanabh S. (1979) *The Jaina Path of Purification,* University of California Press, California.
8. Cort, John E. (2001) *Jains in the World: Religious Values and Ideology in India,* Oxford University Press, Oxford.

****